वार्तालाप–547, फर्रूखाबाद (उ.प्र.), तारीख–04.04.08
Disc.CD No.547, Dt. 4.4.08, Farrukhabad (Uttar Pradesh)

समय–0.15–0.50
जिज्ञासु– बाबा, संकल्प और विकल्प में क्या अंतर है?
बाबा– वि माना विपरीत। संकल्प कहते हैं जो ज्ञानयुक्त संकल्प चले वो हुए संकल्प माना अच्छे संकल्प और विकल्प माना विपरीत संकल्प। जो संकल्प नहीं चलने चाहिए, जिससे अड़चन आती है, नुकसान होता है, हानि होती है उसको कहते हैं विकल्प।

Time: 0.15-0.50
Student: Baba, what is the difference between *sankalp* (good thought) and *vikalp* (bad thought)?
Baba: *Vi* means *vipreet* (opposite). The thoughts which are created in accordance with knowledge are *sankalp* meaning good thoughts (*achchey sankalp*) and *vikalp* means opposite thoughts. The thoughts which should not be created, which create obstacles, which bring about a loss, which bring harm are called *vikalp*.

समय–5.30–6.06
जिज्ञासु– रावण राज्य में संकल्प विकल्प कैसे बनते हैं?
बाबा– बुरे कर्म करते हैं, जैसे कर्म करेंगे वैसे ही संकल्प चलेंगे । कसाई सारा दिन जानवर काटेगा तो उसके संकल्प–विकल्प कैसे चलेंगे ? दुकानदार सारा दिन दुकान में बैठकर के कपडे फाडेगा तो उसको स्वप्न कैसे आवेंगे? वैसे ही स्वप्न आवेंगे, वैसे ही संकल्प आवेंगे। कर्मों के आधार पर संकल्पों की रील, स्वप्न की रील बनती है।

Time: 5.30-6.06
Student: How do *sankalp* become *vikalp* in the kingdom of Ravan?
Baba: If they perform evil actions; as are the actions performed so will be the thoughts. If a butcher cuts animals throughout the day, what kind of thoughts will he create? If a shopkeeper tears clothes sitting at his shop throughout the day, what kind of dreams will he have? He will have dreams accordingly. He will create thoughts accordingly. The reel of thoughts, the reel of dreams is created on the basis of actions.

समय–6.10–7.35
जिज्ञासु– (पान्डव जब) तालाब में पानी पीने गये तो एक चुल्लू पानी पीते ही बेहोश क्यों हो गये?
बाबा– हाँ। वो तो कथा कहानी बैठकर बनाई है।
जिज्ञासु– और चारों के चारों सो गये।
बाबा– चारों क्यों सो गये?
जिज्ञासु– चारों बेहोश हो गये ना?
बाबा– बेहोश हो गये। बेहोश हो गये तो कोई ज्ञान ऐसा होता है जो ज्ञान में मिक्शरिटी होती है। जैसे आज कल विष्णू पार्टी निकली हुई है। तो विष्णू पार्टी ऐसा मिक्स ज्ञान सुनाती है, ग्लानी का ज्ञान सुनाती है (जो) ज्ञान जल दूषित हो जाता है। दूषित हुआ ज्ञान जल पीये और अचेत हुए।
जिज्ञासु– और अर्जुन तो नहीं हुए अर्जुन....।
बाबा– अर्जुन अचेत हुआ लेकिन युद्धिष्ठिर अचेत नहीं होते है। अज्ञान जल का उनके ऊपर असर नहीं होता जो धर्म के ऊपर चलते हैं, धर्म के पक्के होते हैं। जो धर्म के पक्के नहीं

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

होते वो श्रीमत की बरखिलाफी करते हैं। कुछ न कुछ बरखिलाफी होती है और उनको अज्ञान का असर हो जाता है। वो स्थूल जल की बात नहीं है।

Time: 6.10-07.35
Student: (When the Pandavas) went to drink water from the pond, why did they became unconscious on drinking just a handful of water?
Baba: Yes. Those are the stories that they have created.
Student: And all four of them went to sleep.
Baba: Why did all four of them sleep?
Student: All the four of them became unconscious, didn't they?
Baba: They became unconscious. They became unconscious …; there is some knowledge which is a mixed knowledge. Just like the Vishnu party nowadays. So, the Vishnu party narrates such mix knowledge, such knowledge of defamation that the water of knowledge becomes polluted. They drank the polluted water of knowledge and became unconscious.
Student: And Arjun did not become [unconscious], he….
Baba: Arjun became unconscious but Yuddhishthir doesn't become unconscious. Those who follow [the path] of religion, who are firm in their religion, the water of ignorance doesn't affect them. Those who are not firm in their religion go against shrimat. They go against shrimat to some extent or the other and ignorance affects them. That is not about the physical water.

समय–13.45–16.13
जिज्ञासु– बाबा ये हद के रामदेवजी जो प्राणायाम सिखा रहे हैं, इससे लाभ हो सकता है? वैसे तो बहुत कुछ वो हमारे अनुकूल सिखा रहे हैं।
बाबा– ऐसे प्राणायम और ऐसे आसन की परिक्रियायें ऐसे तो हजारों वर्ष से सिखाते चले आये। ये कोई नई बात थोडे हो गई। हाँ, कोई ऊपर से नई आत्मा आती है वो ऐसे पार्ट बजाती है तो उसका नामाचार हो जाता है चारों ओर लेकिन जो पार्ट बजाते हैं वो अपना नामाचार करने के लिए पार्ट बजाते हैं या गुप्त पार्ट बजाते हैं? तो नामाचार ले लिया तो फायदा क्या हुआ? और भगवान तो आकर के गुप्त पार्ट बजाते हैं। काम सबसे बड़ा करना जो दुनिया में कोई भी नहीं कर सका और नाम अपना गुप्त कर देना। (कितनी) इतनी बडी बात हो गई। इससे सिद्धि ज्यादा होती है।

Time: 13.45-16.13
Student: Baba, can we benefit from the *Pranayama*[1] that Ramdev[2] in a limited sense is teaching? In fact, much of his teachings are favourable to us.
Baba: Such *Pranayama* and *asanas* are being taught for thousands of years. It is not a new thing. Yes, when a new soul comes from above, it plays such part that it becomes famous everywhere, but do they play a part for the sake of making themselves famous or do they play a hidden part? If they accept the fame, then what is the use? And God comes and plays a hidden part. Doing the biggest task which nobody can perform in the world and making oneself hidden. It is such a great thing. It leads to more success.

कहते भी हैं ''जोग जुगती जप मंत्र प्रभाऊ फलही तबही जब करिये दुराऊ''जो अच्छा काम किया जाये वो गुप्त होकर किया जाये। उसको प्रत्यक्ष करने की दरकार नहीं। जब उसका प्रभाव निकलेगा तो अपने आप ही प्रत्यक्षता हो जायेगी। कोई के दुकान में अच्छा माल, प्योर

[1] breathing exercises
[2] a *hathyogi* well known in North India.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

माल मिलता है तो उसको ऐडवर्टाइज़मेंट करने की दरकार नहीं। जो उस माल को यूज करेगा वो चारों तरफ अपने आप ही बखान करेगा। इसलिए बेसिक नॉलेज में जो बेसिक ज्ञान सुनाते हैं बी.के. वो कितना ऐडवर्टाइज़मेंट करते हैं और एडवान्स में कोई ऐडवर्टाइज़मेंट नहीं होता। न मेले होते हैं, न मलाखड़े होते हैं, न कॉन्फ्रेन्स होती है, न मेगा–प्रोग्राम होते हैं, न भाषणबाजी होती है, न गैदरिंग होती है फिर भी जो आत्मायें निकल रही हैं वो खुब मजबूत आत्मायें निकलती हैं और एक से दूसरे को, दूसरे से चौथे को संदेश मिलता चला जाता है। पक्का फाउन्डेशन पड़ता है।

It is also said, '*jog juguti jap mantra prabhau faley tab hi jab kariye durau'* (yog, skill, chanting, mantra etc. bring results when they are done in secret). Any noble task should be performed secretively. There is no need to reveal it. When its effect is visible the revelation will take place automatically. If good material, pure material is available in someone's shop, there is no need for him to do advertisement. Whoever uses his material will spread the word everywhere automatically. This is why the BKs who narrate basic knowledge in the Basic [party] advertise so much and there is no advertisement in the Advance (party). Neither are fairs organized, nor are conferences organized, nor mega-programmes, nor lectures, nor are there any gatherings. Still, the souls that are emerging are very strong souls and one person gives message to the second one, the second one gives message to the fourth one and the message goes on spreading. A strong foundation is laid.

समय–16.15–18.56
जिज्ञासु– 76 में बाप की प्रत्यक्षता हुई तो जिन्होंने बाप को सहयोग दिया और अभी वो विरोधी हो गये हैं तो ऐसे ही 92–93 में भी भट्ठी करने के बाद जो विष्णु पार्टी में गये हैं वो सहयोग के अधिकारी हैं क्या? इनमें अंतर क्या है?
बाबा– जो जितना सहयोग करता है उसको उतना सहयोग मिल जाता है। शुरूआत में जिन्होंने सहयोग दिया जबकि कोई भी सहयोगी दुनिया में नहीं थे तो उनका हिस्सा ज्यादा बनेगा या बीच में जब ढ़ेर सारे सहयोगी बन गये उसके बाद जिन्होंने सहयोग दिया उनका हिस्सा ज्यादा बनना चाहिए?
जिज्ञासु– शुरू में दिया उनका भाग्य बनता है।
बाबा– शुरूआत वालों का ज्यादा भाग्य बन जाता है। जैसे फसल बोई जाती है तो पहले–2 जिन्होंने फसल बो दी, मौसम के शुरूआत में ही उनको ज्यादा फसल मिल जाती है। फसल का लाभ ज्यादा मिलता है और जो पिछाड़ी में फसल बोते हैं वो फसल कच्ची रह जाती है।

Time: 16.15-18.56
Student: When the revelation of the Father took place in 1976, those who gave cooperation to the Father and have become opponents now; so similarly, those who went to the Vishnu party after doing *bhatti* in 1993-94 – are they entitled to receive cooperation? What is the difference between both cases?
Baba: Whoever cooperates to whatever extent gets cooperation to the same extent. Those who cooperated in the beginning [did so at a time] when there was no helper in the world, will they get a greater share or should those who help in the middle, when many had become helpers, get a greater share?
Student: Those who helped in the beginning accumulate fortune.
Baba: Those who helped in the beginning accumulate greater fortune. For example, when a crop is sown, those who sowed the crop at the very beginning of the season reap a greater yield. They reap more benefit from the crop. And those who sow later on, that crop yields less.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– बाबा जो विष्णु पार्टी में गये तो वो सहयोग के अधिकारी हैं क्या? उनका भाग्य क्या है?
बाबा– हट्ठी तो एक ही है; जावेंगे कहाँ? फिर बाद में कहाँ आके पूँछ लटकावेंगे? सच्चाई तो सर के ऊपर चढ़कर बोलती है। सत्य को थोडे समय के लिए दबाया जा सकता है, गुप्त किया जा सकता है लेकिन हमेशा के लिए दबा दिया जाये वो नहीं हो सकता। अंत में जाकर फिर सच्चाई प्रत्यक्ष होती है जोर से और झूठों का सबका नाश हो जाता है। असत्य का नाश और सत्य की स्थापना हो जाती है। सतधर्म की स्थापना असतधर्मों का विनाश हो जाता है। तो झूठी बातें फैलानेवाले स्वतः ही खलास हो जायेंगे। फिर उनको सहयोग मिलेगा। जितना शुरूआत में उन्होंने सहयोग दिया है उसी हिसाब से उनको सहयोग मिलेगा। रजोप्रधानता में सहयोग दिया है तो रजोप्रधान सहयोग मिलेगा, सतोप्रधानता समय में सहयोग दिया है तो सतोप्रधानता का सहयोग मिलेगा, तमोप्रधान दुनिया की शूटिंग में सहयोग किया है तो तमोप्रधान सहयोग मिलेगा।

Student: Baba, are those, who have gone to Vishnu Party, entitled to receive cooperation? What is their fortune?
Baba: The destination (*hatti*) is only one; where will they go? Later on where will they come and wag their tail? Truth speaks fearlessly. Truth can be suppressed, hidden for a short time, but it cannot be suppressed forever. Ultimately truth is revealed forcefully in the end and all the false ones are destroyed. Falsehood is destroyed and truth is established. The true religion is established and the false religions are destroyed. So, those who spread falsehood will perish automatically. Then they will get cooperation. They will get help to the same extent to which they have helped in the beginning. If they have helped in the *rajopradhan*[3] stage, they will get *rajopradhan* help; if they have helped in the *satopradhan*[4] time, they will get *satopradhan* help. If they have helped in the shooting of the *tamopradhan*[5] world, they will get *tamopradhan* help.

समय–19.40–20.30
जिज्ञासु– बाबा, ब्राह्मणों की दुनिया में महाभारत का कौनसा एपिसोड चल रहा है?
बाबा– महाभारत अभी शुरू ही कहाँ हुआ है। अभी तो सिर्फ फाउन्डेशन पड़ रहा है। अंदर–2 आग सुलग रही है। कभी भी आगे चल के विस्फोट हो सकता है। एक ही एक संगठन में सब धर्मवाले घुसे हुए बैठे हैं। जैसे एक ही हिन्दुस्तान में हिंदु, मुसलमान, सिख, इसाई सब घुसे बैठे हैं। एक ही भारत की राजधानी दिल्ली में हर धर्म के लोग घुसे बैठे हैं।

Time: 19.40-20.30
Student: Baba, which episode of Mahabharata is going on in the world of Brahmins?
Baba: Has the Mahabharata begun yet? Now just the foundation is being laid. The fire is igniting inside. Explosion can take place anytime in future. People of all the religions have intruded in the same gathering; just as Hindus, Muslims, Sikhs, Christians have all intruded in Hindustan alone, people of all the religions have intruded the capital of India, i.e. Delhi alone.

[3] dominated by activity and passion.
[4] stage of goodness and purity
[5] dominated by darkness or ignorance

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय–21.16–22.07
जिज्ञासु– सहयोग अगर थोड़ा मिलेगा बाबा ... से सहयोग मिले गोरखपुर से....
बाबा– सहयोग और स्नेह ये मांगा नहीं जाता है। जितना हम सहयोग देंगे उतना लाज़मी हमको सहयोग जरूर मिलेगा। जितना हम दूसरों को स्नेह देंगे लाज़मी उतना सहयोग जरूर मिलेगा। ईश्वरीय सेवा में भी जितना सहयोग बिजारोपण करेंगे उतना फसल हमको जरूर काटने को मिलेगा। और ये तो भगवान का घर है इसमें देर है लेकिन अंधेर, अंधेर नहीं हो सकता।

Time: 21.16-22.07
Student: Baba, if we receive a little cooperation… if we receive cooperation from Gorakhpur….
Baba- Cooperation and affection are not asked for. The more we cooperate; we will surely receive cooperation to that extent. The more we give affection to others; we will certainly receive cooperation to that extent. The more we sow the seed by extending cooperation in godly service; we will certainly reap its fruit. And this is God's home; there can be delay over here, there cannot be darkness.

समय–24.15–25.35
जिज्ञासु– बाबा सारे विश्व का मालिक बनने में कैसी सूक्ष्म मेहनत है?
बाबा– याद की सूक्ष्म मेहनत है।
जिज्ञासु– कैसे?
बाबा– कैसे? याद एक की याद रहे और कुछ याद न आये।` तो बडी भारी मेहनत है। एक की याद आती है लगातर? नहीं आती?
जिज्ञासु– लगातर....
बाबा– लगातर नहीं आती? क्यों नहीं आती? जरूर मेहनत है। माया बुद्धियोग हिला देती है। बुद्धि कहाँ की कहाँ भाग जाती है। फिर उसको फिर बार–2 ठिकाने पर लाना, बार–2 याद में टिकना यही बड़ी भारी मेहनत है। बुद्धि का एकाग होना और सारा वायब्रेशन जैसे कन्ट्रोल हो जाना। उस वायब्रेशन में जो भी आत्मायें आवेंगी उनमें से कोई भी हमारा विरोध करनेवाली नहीं रहेगी। वो ही युनिटी बन जायेगी।

Time: 24.15-25.35
Student: Baba, what is the subtle effort involved in becoming the master of the entire world?
Baba: The subtle effort of remembrance is involved.
Student: How?
Baba: How? There should be the remembrance of the One and nothing else should be remembered. So, this is a very great effort. Do you remember the 'one' continuously? Don't you?
Student: Continuously....
Baba: Don't you remember continuously? Why not? Certainly it involves effort. Maya shakes the intellect. The intellect wanders to so many places. Then to bring it to the correct place again and again, to become constant in remembrance again and again, this alone is a very difficult effort. When the intellect becomes focused, it is as if the entire vibration becomes controlled. Whichever soul comes within those vibrations will not remain our opponent. That will create unity.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय–25.33–26.22
जिज्ञासु– माला तैयार होने के लिए बाप को अंत तक गुप्त रहना पड़ेगा। इसका अर्थ क्या है?
बाबा– और क्या। बाप अगर प्रत्यक्ष होता है तो सब पहचान लेंगे। सब पहले मणके के नजदीक पहूँच जायेंगे। बाप गुप्त रहेगा तो जो ज्यादा पुरूषार्थी होंगे, तीव्र पुरूषार्थी उनके बुद्धि में ही क्लीयर होगा। जितना जो अव्यक्त स्टेज में टिकेगा, बाप को पकड़ेगा। अव्यक्त स्टेज में स्थिर नहीं होगा तो बाप की पकड़ से दूर हो जावेगा। माला से भी दूर हो जावेगा।

Time: 25.33-26.22
Student: The Father will have to remain hidden till the end in order to prepare the rosary. What is its meaning?
Baba: What else. If the Father is revealed, all will recognize Him. All will reach close to the first bead. If the Father remains hidden, He will be clear [only] in the intellect of the ones who make more *purusharth* (spiritual effort), those who are intense *purusharthis* (those who make spiritual effort). The more someone remains stable in the *avyakt* stage; he will catch hold of the Father to that extent. If he doesn't remain stable in the *avyakt* stage, he will be far away from the grip of the Father. He will go far away from the rosary too.

समय–26.25–28.52
जिज्ञासु– बाबा अष्टदेव की मुख्य पहचान कौन–कौनसी होगी?
बाबा– नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। पेपर शुरू हो गये कि नहीं हो गये?
जिज्ञासु– हो गये।
बाबा– पेपर शुरू भी हो चुके हैं, रिजल्ट भी निकल रहा है। ज्ञान में आने मात्र से, शुरूआत से ही उनका जीवन ऐसा होगा। खाने–पीने में मोह नहीं, पहनने–ओढ़ने में मोह नहीं, अच्छे–2 मकान में रहने का भी मोह नहीं। सिर्फ एक ही लगन होगी शुरूआत से ईश्वरीय सेवा, सेवा और सेवा और एक की ही याद। एक ईश्वरीय सेवा। तन भी ईश्वरीय सेवा में अर्पण करना ये नहीं कि धन कमाने में लगाना। रोटी–दाल की भी चिंता नहीं कि हमारे पास बैंक–बैलेन्स कुछ भी नहीं है, कैसे आगे की जिंदगी चलेगी? अटल विश्वास। बाबा ने बोला है – मेरे बच्चे भूख नहीं मर सकते। तो कोई परवाह नहीं। प्रैक्टिकल में देखने में आवेगा कि न लौकिक संबंधियों का मोह, न अलौकिक संबंधियों का मोह। लोहे की जंजीरे भी कटी हुई होंगी, सोने की जंजीरे भी कटी हुई दिखाई पडेंगी। शुरूआत से लेकर के अंत तक ये स्टेज उनकी ज्यादा दिखाई देगी।
जिज्ञासु– वो कितने दिनों से ज्ञान में आये होंगे?
बाबा– जब से आये होंगे। कोई आज ज्ञान में आये और अष्टदेव की लिस्ट में आ सकता है। जब से आए तब से उनकी स्टेज ऐसी बनी हुई होगी। फाउन्डेशन ही कच्चा होगा तो सारी बिल्डिंग पुरूषार्थ की कच्ची बन जावेगी।

Time: 26.25-28.52
Student: Baba, what will be the main indications of the eight deities?
Baba: *Nashtomoha smritilabdha* (conquering attachment and regaining the awareness of the self). Have the examinations begun or not?
Student: They have.
Baba: The examinations have started and the result is also being declared. From the time of entering [the path of] knowledge, from the beginning itself their life will be like this. They will not have attachment in eating and drinking; they will not have attachment for wearing and draping; they will not have the attachment for living in nice houses either. They will have only one desire from the beginning: godly service; service and only service and the

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

remembrance of only the One. One Godly service. The body should also be dedicated in godly service. It shouldn't be that you dedicate it in earning money. They should not be worried even about *roti-daal* (meals) [thinking:] we do not have a bank balance. How will we continue to live? [They have an] unshakeable faith. Baba has said: "My children cannot die of hunger". So, they have no worry. It will be visible in practice that they will neither have attachment for the *lokik* relatives nor *alokik* relatives. Their iron chains as well as their golden chains will be cut. This stage of theirs will be visible more from the beginning till the end.
Student: Since when must they be following knowledge?
Baba: Ever since they have come. Someone who has entered the path of knowledge today, can come in the list of eight deities. Ever since they came, their stage will be like this. If the foundation itself is weak then the entire building of *purusharth* will be weak.

समय–28.55–30.22
जिज्ञासु– बाबा, इस लौकिक दुनिया में कोई ऐसे हैं जो माँ–बाप के सिर्फ अकेला है। लौकिक दुनिया में वो ऐसे है कि माँ–बाप के अकेले हैं लेकिन वो काफी दिन से ज्ञान में चलते हैं और बहुत कुछ प्राप्त किये भी हैं। तो फिर वो लौकिक दुनिया में जाना नहीं चाहते थे लेकिन माँ–बाप उनके बहुत प्रेशर करते हैं। अगर वो माँ–बाप को छोड़ दे तो क्या वो पाप होगा या पुण्य होगा?
बाबा– स्थिति, परिस्थिति, माहौल देखा जाता है। उनके माँ–बाप अपने पैरों खड़े हुए हैं, उनकी परवरिश का पूरा ज़रिया बना हुआ है, कोई बंधन नहीं है माँ–बाप का, तो छोड़ के चले आये तो कोई हर्जा नहीं और माँ–बाप को बच्चे के आधार के अलावा कोई दूसरा आधार ही नहीं है, माँ–बाप बूढ़े हो गये हैं, उनकी परवरिश करनेवाला कोई है ही नहीं, देखभाल करनेवाला है ही नहीं और एक बच्चा है, इकलौता वो भी छोड़ कर के सन्यासी बन जायेगा तो बाप पसंद करेगा ऐसे सन्यासी को? ये सन्यासवृत्ति हो गई या प्रवृत्तिमार्ग हुआ? जो अपने घर–परिवार वालों को ही दुख देगा तो अलौकिक जीवन में सुखी हो जायेगा क्या?

Time: 28.55-30.22
Student: Baba, there is someone like this in the *lokik* world, who is the only child of his parents. In the *lokik* world he the only child of his parents but he has been following knowledge for a long time and he has also achieved a lot. So, then, he does not want to go to the *lokik* world, but the parents are pressurizing him a lot. If he leaves the parents, will it be a sin or a noble act?
Baba: The condition, situation, atmosphere is seen. If his parents are self dependent; if their sustenance is ensured, if there is no bondage of the parents, then he can leave them and come; there is no harm in it and if the parents have no support other than the son, if the parents have grown old, if there is nobody to take care of them, to look after them, if he is the only child, and if he too leaves them (parents) and becomes a *sanyasi*, then will the Father like such a *sanyasi*? Will it be called a tendency of *sanyasis* or a path of household? Will the one who gives sorrows to his family members themselves become happy in the *alokik* life?

समय–40.57–42.40
जिज्ञासु– बाबा, सुदामा ने कृष्ण के चने चुराकर खाये थे।
बाबा– हाँ, चने खिला के।
जिज्ञासु– चुराकर खाये थे तो उसको दरिद्रता का श्राप मिला।
बाबा– ठीक है।
जिज्ञास– तो ये यज्ञ के आदि में कैसे हुआ था?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा– यज्ञ के आदि में रामवाली आत्मा ने धन हर लिया होगा ब्रह्माबाबा का तो अगले जन्म में गरीब बनना पडा। नाम पड गया सुदामा। दाम माना धन–संपत्ति। कहते हैं ना इनके पास दाम बहुत है। दाम माना नोट बहुत है। वो तो दुनियावाले तो हद की नोट समझते हैं। यहाँ कौनसे नोट हैं? यहाँ ज्ञानधन की बात है।

Time: 40.57-42.40
Student: Baba, Sudama stole grams (*cana*[6]) from Krishna and ate them.
Baba: Yes, he ate grams.
Student: He stole and ate it. So, he got the curse of poverty.
Baba: It is right.
Student: So, how did this happen in the beginning of the *yagya*?
Baba: The soul of Ram must have taken the wealth of Brahma Baba. So, he had to become poor in the next birth. He got the name Su-dama. *Daam* means wealth. It is said, "this person has a lot of *daam* (wealth)", isn't it? *Daam* means he has a lot of '*notes'*. The people of the world consider it to be a 'note' in a limited sense. [It is about] which 'notes' here? Here it is about the wealth of knowledge.

तो दामा माना धन संपत्तिवाला। कैसी धन संपत्तिवाला? सुदामा। सु माना सुंदर दाम। सुंदर धन संपत्ति जिसके पास ज्यादा है माना रामवाली आत्मा। पिछले जन्म में फेल हो गई। जब फेल हो जाता है, अनिश्चयबुद्धि बन जाता है तब वो धन को वापस लेता है, चाण्डाल बनता है या नहीं बनता है? कोई को ज्ञान में चलते–2 अनिश्चय हो जाये... पहले उसने बहुत कुछ दिया और खट से अनिश्चय हो गया तो जो कुछ भी हाथ में है वो अपने कन्ट्रोल में लेगा या नहीं लेगा? लेगा। तो यज्ञ के आदि में पूरा ज्ञान तो था नहीं इसलिए अनिश्चय बुद्धि बन गये, फेल हो गये। फेल हो गये तो ईश्वरीय संपत्ति उन्होंने अपने कब्जे में कर ली।

So, *dama* means a wealthy person. What kind of a wealthy person? Su-dama. *Su* means beautiful wealth (*daam*). The one who has more beautiful wealth, i.e. the soul of Ram. He failed in his previous birth. When he fails, when he loses faith, does he take back that wealth, does he become a *chaandaal* (cremator) or not? If someone loses faith while following knowledge; initially he gave a lot [in yagya] and suddenly he lost faith; then, will he take whatever he has under his control or not? He will. So, the knowledge was incomplete in the beginning of the yagya; this is why he lost faith, he failed. He failed; so, he took the godly wealth under his control.

समय–51.10–52.00
जिज्ञासु– दूसरों को स्पर्श करने से भी व्यभिचार कहा जाता है और क्लास में किसी को झुटका आये और उसे हिलाया जाये तो उसे क्या कहा जायेगा?
बाबा– वो तो भावना देखी जाती है। ''भाव प्रधान विश्व रचि राखा'' भावना देखी जाती है। किस भावना से क्या कर्म किया गया? किसी की भावना दूसरे को जगाने की है... एक होती है टच करने की भावना देह अभिमान भोगने की और एक होती है भावना दूसरों को जगाने की। तो भावना काम करेगी या जो कर्म किया है वो कर्म काम करेगा? हर बात में भावना देखी जाती है। कर्म वो ही है लेकिन भावना अलग है तो उसका फल भी अलग होगा।

[6] roasted grams

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 51.50-52.00
Student: It is said that even touching others is adultery but if someone is sleeping in the class and if we shake him/her, what will that be called?
Baba: The intention is observed. '*Bhaav pradhaan vishwa rachi rakha*[7]'. The intentions are seen. The action was performed with which intention? If someone's intention is to wake up someone… One is the intention to touch, to experience body consciousness and one is the intention to wake up others. So, will the intention work or will that action work? The intention is seen in everything. If the action is the same but the intention is different, then its fruit will also be different.

समय–52.05–52.45
जिज्ञासु– बाबा जब याद में बैठने लगो तो जम्हाई क्यों आती है?
बाबा– शरीर थका हुआ होगा तो जम्हाई आयेगी, कम सोया हुआ होगा तो भी जम्हाई आयेगी, ज्यादा नींद कर के याद में बैठेंगे तो भी जम्हाई आयेगी।
जिज्ञासु– इसका उपाय क्या है?
बाबा– इसका उपाय बैलेन्स में रहो। न ज्यादा सोना, न ज्यादा जगना, न ज्यादा थकना।
जिज्ञासु– सोते दिखाई ज्यादा नहीं हैं लेकिन...
बाबा– जागते ज्यादा हैं।

Time: 52.05-52.45
Student: Baba, why do we yawn (*jamhaai*) when we sit in remembrance (of Baba)?
Baba: If the body is tired, you will yawn; even if you have had inadequate sleep, you will yawn; you will yawn even if you sit in remembrance after sleeping a lot.
Student: What is its solution?
Baba: The solution is to maintain a balance. Neither sleep more nor remain awake more, nor tire yourself more.
Student: We don't sleep more, but.....
Baba: You remain awake for a longer period.

समय–52.50–53.40
जिज्ञासु– बाबा कम्पिल में जो सेवा चल रही है वहाँ बंदर बहुत तंग करते हैं। बहुत कपड़े फाड़ते है। क्या उनको मारना चाहिए या नहीं?
बाबा– मारने के बाद नहीं आयेंगे?
जिज्ञासु– 2–3 दिन मारा तो आना बंद हो गया।
बाबा– मारा था?
जिज्ञासु– हाँ।
बाबा– जान से मार दिया?
जिज्ञासु– नहीं। वैसे मारा था, टांग तोड़ दी।
बाबा– वैसे तो मारना है ही। वैसे मारेंगे नहीं तो भागेंगे कैसे? काम की बात पूछो। ये तो जिसको खाना खाना होगा वो अपनी रोटी की सुरक्षा करेगा; नहीं खाना होगा तो बनायेगा और बंदरों के लिए सामने रख देगा ले जाओ। इसमें पूछने की क्या बात है?

Time: 52.50-53.40
Student: Baba, the service (of construction work) that is going on at Kampil; monkeys create a lot of trouble there. They tear the clothes a lot. Should we beat them or not?

[7] the world is created according to the intention with which action is performed

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Will they not come again if you beat them?
Student: When we beat them for 2-3 days, they stopped coming.
Baba: Did you beat them?
Student: Yes.
Baba: Did you kill them?
Student: No. We simply beat them, broke its leg.
Baba: You have to definitely beat them like that. If you don't beat them like that, how will they run away? Ask something useful. Those who have to eat will safeguard their bread. If he is not interested in eating, he will cook and keep it in front of the monkeys so that they take it away. Where is the need to ask in this?

समय–53.50–54.55
जिज्ञासु– बाबा, सर्विसएबुल बच्चों को बाप बहुत याद करते हैं लेकिन अभी बोला है कि कोई मन्सा सेवा से, कोई वाचा सेवा से, कर्मणा सेवा से फास्ट है कोई सुबह से शाम तक सेवा करते हैं लेकिन आत्मिक स्थिति में नहीं रहते हैं। तो क्या उन बच्चों को बाप याद करेंगे?
बाबा– कोई भी बच्चे हो चाहे मन्सा सेवा करनेवाले हो सच्चे दिल से, चाहे वाचा से सच्चे दिल से सेवा करनेवाले हो, चाहे कर्मणा से सच्चे दिल से सेवा करनेवाले हो कैसे भी सेवा करनेवाले बच्चे हैं तो उनको बाबा याद करते हैं और याद का प्रूफ ये होगा कि उन बच्चों को खुशी ज्यादा रहेगी। सेवा करते हैं और खुशी नहीं आती है इससे साबित होता है कि सेवा में स्वार्थ मिक्स हुआ पड़ा है। सेवा के बदले और ही डिससर्विस कर रहे हैं। निस्वार्थ सेवा होनी चाहिए।

Time: 53.50-54.55
Student: Baba, the Father remembers the serviceable children a lot. But it has been told just now that some are fast in doing service through the mind, some through words, some through actions, some keep doing service from the morning till the evening, but do not remain in soul conscious stage. So, will the Father remember those children?
Baba: Be it any child, whether he does service through the mind from his heart, whether he does service through words from his heart, whether he does service through the actions from his heart, whatever kind of service the children may do, Baba remembers them and the proof of His remembrance is that those children will feel more joyful. If someone does service and if there is no happiness, then it proves that there is selfishness mixed in service. They are doing disservice instead of service. The service should be selfless.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info